DETAILS EXPLANATIONS

Paper Code : RPSCEE18 | : RPSCCE18 | RPSCME18

[अनुभाग-अ]

1. **(क)** (i) प्रत्यूह (ii) धात्विक
(ख) (i) वधू + आगमन (ii) मातृ + आज्ञा

2. **(क)** (i) सभापति (ii) रक्तदान
(ख) (i) मातृ की भाषा (ii) राज्य का दूत

3. **(क)** (i) सुनिश्चय (ii) प्रबंध
(ख) (i) परि (ii) वि

4. **(क)** (i) घुमक्कड़ (ii) चालाक
(ख) (i) अन (ii) नी

5. **(क)** (i) वर (ii) दोष
(ख) (i) प्रतिरक्षा (ii) नास्तिक

6. (i) बुरा – निष्ठा रहित (ii) तालाब – भोजन

7. (i) अपेय (ii) अत्याज्य
(iii) अनूढ़ा (iv) अनावृत्त

8. (i) उद्योग (ii) आढ़त
(iii) इन्धन (iv) ऊर्जा

9. (i) वह नहाना चाहता है।
(ii) शिक्षा पाने में कंजूसी क्यों?
(iii) वह गालियाँ बकता रहा।
(iv) वह कमीज पहनकर सो गया।

10. (i) **अर्थ** : गोद में लेना।
वाक्य में प्रयोग : रोते हुए बच्चे को माँ ने अंक में समेट लिया।

(ii) **अर्थ** : किसी पर नियन्त्रण न रखना।
वाक्य में प्रयोग : आपने सोनू पर अंकुश न रखा तो वह हाथ से निकल जाएगा।

(iii) **अर्थ** : रोषपूर्ण कड़ी और कड़वी बाते कहना।
वाक्य में प्रयोग : जब देखों अंगारे उगलते रहते हो कभी हंसकर भी बोला करो।

(iv) **अर्थ** : श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न व्यक्ति।
वाक्य में प्रयोग : मेरी बेटी आयुशी तो मेरा अंगूठी का नगीना है।

(v) **अर्थ** : बहुत प्रसन्न होना।
वाक्य में प्रयोग : परीक्षा में प्रथम आने का समाचार सुनकर मेरा अंग–अंग मुस्काने लगा।

(vi) **अर्थ** : सब भेद कह देना।
वाक्य में प्रयोग : पुलिस का डण्डा देखकर चोर ने सारी बाते उगल दी।

(vii) **अर्थ** : निंदा करना।
वाक्य में प्रयोग : कोई ऐसा काम न करो कि लोग तुम पर उँगली उठाये।

(viii) **अर्थ** : दुःखों और कष्टों से विफल और संत्रस्त होना।
वाक्य में प्रयोग : इस आफत के मारे को तुम तो मत मारो।

11. (i) **अर्थ** : बुद्धिविहिन परन्तु धन सम्पन्न।
वाक्य में प्रयोग : मालिक में कोई खास अक्ल नहीं है पर उसकी फैक्ट्री में आमदनी खूब हो रही है यह तो बात है कि आँख का अंधा गाँठ का पूरा।

(ii) **अर्थ** : अपनी मनमानी करना और एक–दूसरे के साथ तालमेल न रखना।
वाक्य में प्रयोग : प्रधानमंत्री की कोई सुनता ही नहीं है। नेता राष्ट्र को भूलकर अपनी–अपनी ढ़पली अपना–अपना राग अलाप रहें हैं।

(iii) **अर्थ** : योग्यता कम, चमक दमक बहुत।
वाक्य में प्रयोग : स्कूल का नाम तो बहुत सुना लेकिन जाकर देखा तो अनुशासन का नाम नहीं। यहीं तो बात हुई ऊँची दुकान फीका पकवान।

(iv) **अर्थ** : सच–झूँठ का ठीक निर्णय।
वाक्य में प्रयोग : महाराज को अपराधी घोषित करके श्याम शर्मा ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

(v) **अर्थ** : अधिक दिखावा करना।
वाक्य में प्रयोग : रामकरण अपनी जितनी बढ़ाई कर रहा है वैसा वह है नहीं। सुना नहीं तुमने कि थोथा चना बाजे घना।

(vi) **अर्थ** : अधिक बोलने वाला काम नहीं करता।
वाक्य में प्रयोग : राजेश की लम्बी–चौड़ी बातों में मत आना, क्योंकि जो गरजते है वो बरसते नहीं।

(vii) **अर्थ** : जबरदस्ती किसी का अतिथि बनना।
वाक्य में प्रयोग : चार रोज से भविष्य मौसी के देवर का लड़का घर में डेरा जमाये बैठे हैं। यह तो वही बात हुई मान न मान मैं तेरा मेहमान।

(viii) **अर्थ** : सस्ती वस्तु खरीद कर रोज परेशान होना पड़ता है।
वाक्य में प्रयोग : मेरे ख्याल से जो भी खरीदो अच्छी दुकान से खरीदो क्योंकि सस्ता रोए बार–बार महँगा रोए एक बार।

12. (i) संधि (ii) तर्कसंगत
(iii) योग्यता (iv) राजी करना
(v) चूक (vi) बदलना
(vii) गंदी बस्ती (viii) शिकमी देना

[अनुभाग-ब]

13. (i) सदाचार

(ii) नियमों के अनुकूल किये गये काम को सदाचार कहते है।

(iii) उत्तम चरित्र के गुण–

(1) सत्य बोलना (2) सेवा करना

(3) विनम्र रहना (4) बड़ों का आदर करना

(iv) सदाचारी बनने के लिए ईमानदार होना आवश्यक है।

14. (i) ऊँची दुकान, फीका पकवान।

कुछ मनुष्य केवल कोरा दिखावा ही दिखावा करते हैं। उनके अन्दर बहुत से अवगुण होते हैं, लेकिन ऊपर से अच्छे कपड़े और विलासी जीवन का दिखावा करते हैं। चाहे उनके ऊपर करोड़ों का कर्जा है।

(ii) उपकार शील का दर्पण है।

मनुष्य को सदैव उपकार करना चाहिए उपकार करने से मनुष्य बड़ा बन जाता है। दूसरों की निःस्वार्थ सेवा करना ही सबसे बड़ा उपकार है। उपकार ही शील अर्थात् आचरण का माना जाता है। जिस तरह हम दर्पण को देखकर चेहरे के हाव–भाव जानते हैं, उसी तरह उपकार भी शील का दर्पण कहलाता है।

15. कम्प्यूटर शिक्षक की अनिवार्यता समाप्त करने के लिए प्रधानाचार्य राजकिय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जैसलमेर की ओर से सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर को लिखे जाने वाले कार्यालयी–पत्र को लिखिए। **[10]**

अथवा

व्यावसायिक पत्र

तार : विद्या साड़ी

टेलीफोन : 373429, फैक्स : 0141-373439

ई–मेल :

विद्या साड़ी हाउस

147, नेहरू बाजार, जयपुर

पत्र क्रमांकः साड़ी/2019/02 24 फरवरी, 2019

सेवा में,

बिक्री प्रबन्धक

परिधान साड़ी मिल्स लि.

सूरत

विषय : साड़ियों की आपूर्ति हेतु।

संदर्भ : आपका नवीन सूची–पत्र, दिनांक : 17 फरवरी, 2019।

प्रिय महोदय,

आपने अपना नवीन सूचीपत्र मूल्य–सूची सहित भेजा है, इसके लिए आपको धन्यवाद।

आपने लिखा है कि थोक मूल्यों पर आप 3 प्रतिशत की छूट और देंगे। आपने थोक की छूट 10 प्रतिशत से 13 प्रति बढ़ा दी है, यह तो स्वागत योग्य है किन्तु हम पिछले 5 वर्ष से आपके माल की खपत और व्यवहार दोनों जिस प्रकार करते आ रहे हैं वह सब आपकी जानकारी में है। आप यह भी जानते हैं कि अन्य कपड़ा मीलें हमें बार–बार अपनी ओर खींचने की कोशिश करती रही हैं किन्तु हम आपके–हमारे पुराने और स्थायी व्यापारिक संबंधों को महत्त्व देकर आपसे ही जुड़े रहे हैं। हमारी ओर से भुगतान में आपको कभी शिकायत का मौका भी नहीं दिया। फिर पिछली बार आपके बिक्री प्रतिनिधि ने हमसे आदेश लेते समय आपसे कुछ और रियायत करवाने का विश्वास भी दिलाया था। इन सब बातों पर विचार करते हुए हमारा आपसे अनुरोध है कि आप हमारे लिये विशेष छूट में 3 प्रतिशत के स्थान पर 5 प्रतिशत की वृद्धि करें। अन्य मीलें तो हमें 18 प्रतिशत तक का कमीशन देने के लिए तैयार हैं जबकि हम तो आपसे केवल 15 प्रतिशत ही चाह रहे हैं। हमें विश्वास है कि आप हमारे संबंधों का भविष्य अधिक उज्ज्वल बनाने का प्रयास करेंगे।

कृपया निम्नलिखित प्रकार की साड़ियाँ गुजरात ट्रांसपोर्ट कम्पनी द्वारा भेजने का भी कष्ट करें–

(i)	गज्जी सिल्क साड़ी	400 नग
(ii)	चाइना सिल्क, बड़ा बोर्डर	600 नग
(iii)	शिफोन प्रिन्टेड	250 नग
(iv)	चिनोन प्रिन्टेड	350 नग

कृपया माल 10 दिन में अवश्य भिजवा दें। पिछली बार पैकिंग में दो साड़ियाँ खराब हो गई थीं, जिनको आपके बिक्री प्रतिनिधि को बता दिया था और जिन्हें दिनांक 01-02-2019 को पार्सल से आपको भेजा भी जा चुका है, अतः उनको भी बदलवा कर भिजवा दें तथा आगे से पैकिंग सावधानी से करवाएँ। पार्सल की रसीद की छायाप्रति यहाँ संलग्न की जा रही है।

आशा है आपके सहयोग से हमारे संबंध भविष्य में और भी मजबूत होंगे।

मंगलकामनाओं के साथ।

आपका

दिनेश गुप्ता

संचालक

संलग्न : पार्सल की रसीद की छायाप्रति।

16.

राजस्थान विश्वविद्यालय
जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर।

पत्र क्रमांकः 19(02)रा.वि.वि./ले/2019 15 मार्च, 2019

निविदा सूचना संख्या 03/2019-20
रद्दी की नीलामी

परीक्षा की उत्तरपुस्तिकाओं की लगभग 4500 टन रद्दी की नीलामी 28 अप्रैल, 2019 पूर्वाह्न 10:30 बजे कुल सचिव कार्यालय के भूतल हॉल में की जाएगी। इच्छुक क्रेता 28 अप्रैल, 2019 को सुबह 8:00 बजे तक ₹30,000 नकद धरोहर राशि जमाकर उक्त बोलीं में भाग ले सकते हैं। जिसके नाम सर्वाधिक बोली उठेगी उसे रद्दी की कुल राशि का 25% लागत जमा कराना होगा तथा शेष राशि रद्दी उठाने से पहले जमा करवानी होगी। राशि जमा कराने में विलंब होने पर अधोलिखित अधिकारी बोली रद्द कर सकेगा।

वित्तीय अधिकारी
चंचल जैन

अथवा

राजस्थान सरकार
मंत्रिमण्डल सचिवालय
शासन सचिवालय

पत्र क्रमांकः 19(75)/मं.मं./93/651से 750 जयपुर, 24 अप्रैल, 2019

परिपत्र

विषय : जिला स्तर पर मंत्रिमंडल की बैठकों का आयोजन।

जिलों की समस्याओं का गहन अध्ययन कर क्षेत्रीय विकास की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए विकास व प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अधिक गति देने हेतु राज्य सरकार ने जिला स्तर पर मंत्रिमंडल की बैठकें आयोजित करने का निर्णय लिया है। मंत्रिमण्डल की जिला स्तर बैठकों में निम्नलिखित विषयों पर विचार कर निर्णय किया जाएगा–

(क) नियमित विषय–सूची
(ख) प्रशासन द्वारा प्रेषित एवं प्रभारी मंत्री द्वारा सूचीबद्ध जिले व क्षेत्र से संबंधित समस्याओं पर विचार
(ग) कतिपय अंतरविभागीय प्रकरण, जो समन्वय के अभाव में अवशेष हैं
(घ) विकास की प्रमुख माँगें, उनका विश्लेषण एवं उन्हें कब तक क्रियान्वयन हेतु लिया जा सकता है, इस पर निर्णय।

जिलों में मंत्रिमण्डल की बैठकों में विचारणीय विषयों के बारे में आदेशानुसार लेख है कि संबंधित कलेक्टर, संबंधित शासन सचिवगण, क्षेत्रीय व जिलें से संबंधित समस्याँएं जिनका मंत्रिमंडल स्तर पर समाधान होना है, संबंधित मंत्रिगण के माध्यम से मंत्रिमण्डल सचिवालय में प्रेषित करेंगे। संबंधित जिले के प्रभारी मंत्री महोदय जिले में मंत्रिमण्डल की बैठक से पर्याप्त समय पूर्व क्षेत्र व जिले की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सूचीबद्ध कर लेने का कष्ट करेंगे एवं तदुपरांत मुख्यमंत्री महोदय से पूर्व में विचारविमर्श कर इन समस्याओं को मंत्रि–परिषद् में विचारार्थ लिया जा सकेगा।

ह.

उप शासन सचिव

पत्र क्रमांकः 19(75)/मं.मं./93/651से 750 जयपुर, 24 अप्रैल, 2019

प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु–

1. सचिव, राज्यपाल, राजस्थान, जयुपर।
2. सचिव, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार, जयपुर
3. समस्त विशिष्ट सहायक/निजी सचिव, मंत्रिगण/राज्य मंत्रिगण/उप–मंत्रिगण।
4. समस्त शासन सचिव/विशिष्ट शासन सचिव।
5. समस्त विभागाध्यक्ष।
6. सचिवालय के समस्त विभाग, अनुभाग/प्रकोष्ठ।
7. रक्षित पत्रावली।

ह.

उप शासन सचिव

17. यह मेरे जीवन का पहला भाषण माना जा सकता है। मैंने काफी तैयारी की थी। मुझे सत्य पर बोलना था। मैं व्यापारियों के मुँह से यह सुनता आ रहा था कि व्यापार में सत्य नहीं चल सकता इस बात को मैं तब भी नहीं मानता था, आज भी नहीं मानता। यह कहने वाले व्यापारी मित्र आज भी मौजूद हैं कि व्यापार के साथ सत्य का मेल नहीं बैठ सकता। वे व्यापार को व्यवहार कहते हैं, सत्य को धर्म कहते हैं और दलील यह देते हैं कि व्यवहार एक चीज है, धर्म दूसरी। उनका यह विश्वास है कि व्यवहार में शुद्ध सत्य चल हीं नहीं सकता, उसमें तो सत्य यथाशक्ति ही बोला–बरता जा सकता है।

[अनुभाग-स]

18. निबंध :–

(i) विज्ञान के चमत्कार

आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है। अनादी काल से ही मनुष्य को जिन–जिन चीजों की जरूरत होती गई है उन्हें पाने के लिए वह खोज करता रहता है। इन्हीं नये तरीकों और आविष्कारों ने विज्ञान को जन्म दिया है। जिसका फल यह हुआ है कि आज विज्ञान की इतनी प्रगति हुई है कि इसको चमत्कार कहना अत्युक्ति होगी क्योंकि विज्ञान ने ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्यजनक अविष्कार करके एक चमत्कार उत्पन्न कर दिया है।

रोज में होने वाले वैज्ञानिक आविष्कार संसार में नूतन क्रांति कर रहे हैं। आज विज्ञान के कारण हमारे कठिन काम को बहुत ही आसानी से पूरा किया जा सकता है। आज विज्ञान के इतने अविष्कारों के कारण मानव इतना मजबूत हो गया है कि वह दुनिया के हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है।

विज्ञान की तकनीक की वजह से आज के मानव ने दुनियाभर की चीजों पर काबू पा लिया है। विज्ञान की मदद से हम एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर बहुत ही आसानी से जा सकते हैं। विज्ञान की मदद से हम समुद्र में भी साँस ले सकते हैं। आज के समय में विज्ञान के बढ़ते अविष्कार की वजह से ही मानव चन्द्रमा और मंगल जैसे ग्रहों पर रहने के लिए बहुत सी योजनायें बना रहा है। पुरातन काल की असंभव चीज को आज विज्ञान के द्वारा संभव किया जा चुका है।

विज्ञान का अर्थ :

विज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है– वि+ज्ञान। जिसमें वि उपसर्ग लगा है। वि का अर्थ होता है विशेष, अर्थात् दुनिया का विशेष ज्ञान। विशेष ज्ञान वह होता है जो किसी भी कल्पना और अंधविश्वास पर नहीं टिका होता है। विज्ञान किसी संभावना को उस समय तक स्वीकार नहीं करता है जब तक कि कोई कारण बुद्धि के सामने प्रत्यक्ष रूप से न आ जाए। विश्वसनीय सिर्फ वही होता है जिसका प्रयोगात्मक अध्ययन संभव हो। प्रयोग पर प्रमाणिकता का सिद्ध होना इसकी सबसे बड़ी कसौटी है।

वरदान के रूप में :

विज्ञान ने जितनी प्रगति इस शताब्दी में की है उतनी उससे पहले नहीं की थी। इस शताब्दी में तो विज्ञान ने हर क्षेत्र में अपने वरदान को सिद्ध किया है। विज्ञान ने फ्रांस, जापान, जर्मनी, इंग्लैण्ड, रूस, अमेरिका आदि देशों के विभिन्न क्षेत्रों में बहुत ही आश्चर्यजनक आविष्कार करके खुद को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया है।

विज्ञान हर नए अनुसंधान के साथ मानव जीवन को अधिक सरल बनाता चला जा रहा है। आज विज्ञान के बढ़ते चहुंओर विकास के कारण मानव दुनिया के हर क्षेत्र में अग्रसर दिखाई दे रहा है। मानव ने विज्ञान की सहायता से पृथ्वी

पर उपलब्ध हर चीज को अपने काबू में कर लिया है। विज्ञान की सहायता से हम ऊँचे आसमान में उड़ सकते हैं व गहरे पानी में सांस ले सकते हैं।

विज्ञान के बढ़ते हुए विकास के कारण ही हम चन्द्रमा से लेकर मंगल ग्रह में पहुंच पाए हैं। हाल ही में भारत के मंगलयान का सफलता पूर्वक मंगल की कक्षा में पहुंचना मानव की विज्ञान के क्षेत्र में बढ़ रही प्रगति का उदाहरण है। पुरातन काल में जो चीजें असंभव सी प्रतीत होती थी। विज्ञान के बढ़ते उपयोग के कारण अब वह साधारण सी महसूस होती है।

चिकित्सा के क्षेत्र में :

विज्ञान के नए नए शोधों के चलते मानव हर दिन एक नई मुसीबत से छुटकारा पा लेता है। 20 साल पहले मलेरिया जहां जानलेवा बीमारी मानी जाया करती अब विज्ञान की प्रगति के साथ मलेरिया एक आम बीमारी बनकर रह गई हैं। विज्ञान ने चिकित्सा व्यवस्था में बहुत प्रगति कर ली है। पिछले सालों से लाइलाज बीमारी मानी जा रही एड्स पर भी वैज्ञानिकों ने धीरे–धीरे पकड़ बनाना शुरू कर दिया है। माना जा रहा है कि नई चिकित्सा पद्धति के चलते अब एड्स की पकड़ कमजोर पड़ने लगी है। और माना जा रहा है कि निकट भविष्य में इस जानलेवा बीमारी का जड़ से खात्मा हो जाएगा।

यातायात के क्षेत्र में :

आज विज्ञान यातायात के क्षेत्र में दिन दूना और रात चौगुना तरक्की कर रहा है। कहां पहले एक जगह से दूसरे जगह जाने के लिए दिनों लग जाते थे। अब हवाई जहाज और तेज रफ्तार की ट्रेनों के दौर में पलक झपकते एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा जा सकता है।

जहाँ पहले आम लोगों के लिए ज्यादा किराया होने के कारण हवाई यात्रा करना मात्र एक सपना हुआ करता था। आज बदलते दौर के साथ आम लोग भी हवाई यात्रा का किराया वहन कर पाते हैं और हवाई यात्रा का आनन्द उठा पाते हैं। पिछले दस सालों में भारत के लगभग हर घर में कार पहुंच गई है जो विज्ञान की प्रगति को सीधे तौर पर बयां करती है।

संचार के क्षेत्र में :

ऑनलाइन न्यूजपेपर, ऑनलाइन न्यूजसाइट पर एक क्लिक पर खबरों का संसार मौजूद है। वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया के चप्पे–चप्पे की खबर हम अपने मोबाइल का एक बटन दबाते ही जान लेते हैं। फेसबुक, ट्विटर, वाट्सऐप के सहारे चाहे हम अपने सगे संबंधियों से कितने ही दूर क्यों न हों, पर इन सबके माध्यम से अब हम उनसे 24 घंटे जुड़े रह सकते हैं।

उपसंहार :

इस प्रकार विज्ञान के नित नए अविष्कार हमारे जीवन में रोज चमत्कार उत्पन्न कर रहे हैं। हर दिन एक नई खोज, नए उत्पाद से हमारा परिचय होता है जो हमारे जीवन की जटिलता को सरल बना रहे हैं।

(ii) भारतीय समाज में नारी का महत्त्व

प्रस्तावना :

नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। यह एक विडम्बना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त विरोधाभासी रही है। एक तरफ तो उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है तो दूसरी ओर उसे 'बेचारी अबला' भी कहा जाता है। इन दोनों ही अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतन्त्र विकास में बाधा पहुंचाई है। प्राचीनकाल से ही नारी को इन्सान के रूप में देखने के प्रयास सम्भवतः कम ही हुये हैं। पुरुष के बराबर स्थान एवं अधिकारों की मांग ने भी उसे अत्यधिक छला है। अतः वह आज तक 'मानवी' का स्थान प्राप्त करने से भी वंचित रही है।

चिन्तनात्मक विकास :

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बलबूते पर भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न–भिन्न रूपों में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे वह सीता हो, झांसी की रानी, इन्दिरा गाँधी हो, सरोजनी नायडू हो।

किन्तु फिर भी वह सदियों से ही क्रूर समाज के अत्याचारों एवं शोषण का शिकार होती आई हैं। उसके हितों की रक्षा करने के लिए एवं समानता तथा न्याय दिलाने के लिए संविधान में आरक्षण की व्यवस्था की गई है। महिला विकास के लिए आज विश्व भर में ''महिला दिवस'' मनाये जा रहे हैं। संसद में 33% आरक्षण की मांग की जा रही है।

इतना सब होने पर भी वह प्रतिदिन अत्याचारों एवं शोषण का शिकार हो रही है। मानवीय क्रूरता एवं हिंसा से ग्रसित है। यद्यपि वह शिक्षित है, हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है तथापि आवश्यकता इस बात की है कि उसे वास्तव में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय प्रदान किया जाये। समाज का चहुँमुखी वास्तविक विकास तभी सम्भव होगा।

उपसंहार :

स्पष्ट है कि भारत में शताब्दियों की पराधीनता के कारण महिलाएं अभी तक समाज में पूरी तरह वह स्थान प्राप्त नहीं कर सकी हैं जो उन्हें मिलना चाहिए और जहाँ दहेज की वजह से कितनी ही बहू–बेटियों को जान से हाथ धोने पड़ते हैं तथा बलात्कार आदि की घटनाएं भी होती रहती हैं, वहीं हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक परम्पराओं और शिक्षा के प्रसार तथा नित्यप्रति बढ़ रही जागरूकता के कारण भारत की नारी आज भी दुनिया की महिलाओं से आगे है और पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर देश और समाज की प्रगति में अपना हिस्सा डाल रही है।

सदियों से समय की धार पर चलती हुई नारी अनेक विडम्बनाओं और विसंगतियों के बीच जीती रही है। पूज्जा, भोग्या, सहचरी, सहधर्मिणी, माँ, बहन

एवं अर्धांगिनी इन सभी रूपों में उसका शोषित और दमित स्वरूप। वैदिक काल में अपनी विद्यत्ता के लिए सम्मान पाने वाली नारी मुगलकाल में रनिवासों की शोभा बनकर रह गई।

लेकिन उसके संघर्षों से, उसकी योग्यता से बन्धनों की कड़ियां चरमरा गई। उसकी क्षमताओं को पुरुष प्रधान समाज रोक नहीं पाया। उसने स्वतन्त्रता संग्राम सरीखे आन्दोलनों में कमर कसकर भाग लिया और स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान में बराबरी का दर्जा पाया।

(iii) राष्ट्रभाषा : हिन्दी

भूमिका :

राष्ट्रभाषा का अर्थ है राष्ट्र की भाषा अर्थात् ऐसी भाषा, जिसका प्रयोग देश की हर भाषा के लोग आसानी से कर सकें, बोल सकें और लिख सकें। हमारे देश की ऐसी भाषा है हिन्दी। आजादी के पहले अंग्रेजी सरकार ने अंग्रेजी के माध्यम से सारा काम चलाया किन्तु अपने देश में सबके लिए एक भाषा का होना आवश्यक है, ऐसी भाषा जो अपने देश की हो। वह भाषा केवल हिन्दी ही है।

विशेषताए :

हिन्दी को संस्कृत की बड़ी बेटी कहते हैं। हिन्दी का प्रमुख गुण यह है कि यह बोलने, पढ़ने, लिखने में अत्यंत सरल है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् जॉर्ज ग्रियर्सन ने कहा है कि हिन्दी व्याकरण के मोटे नियम केवल एक पोस्टकार्ड पर लिखे जा सकते हैं।

संसार के किसी भी देश का व्यक्ति कुछ ही समय के प्रयत्न से हिन्दी बोलना और लिखना सीख सकता है। इसकी दूसरी विशेषता है कि यह भाषा लिपि के अनुसार चलती है इसमें जैसा लिखा जाता है, वैसा ही बोला जाता है।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि संसार की लगभग सभी भाषाओं के शब्द इसमें घुलमिल सकते हैं। कुर्सी, अलमारी, कमीज, बटन, स्टेशन, पेंसिल, बेंच आदि अनगिनत शब्द हैं जो विदेशी भाषाओं से आकर इसके अपने शब्द बन गए हैं। हिन्दी संसार के अनेक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है और इसका साहित्य भी विशाल है। इसके अलावा, हिन्दी ने देश में एकता लाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्तर से लेकर दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक, भारत के अधिकतर विद्वानों ने भारत की एकता और अखंडता के लिए हिन्दी का समर्थन किया है।

बाधाएँ :

इतने अधिक गुणों से भरपूर होकर भी हिन्दी आज अंग्रेजी से पीछे क्यों चल रही है? इसका सबसे बड़ा कारण है ऊँचे पदों पर बैठे व्यक्ति जो अंग्रेजी के पुजारी हैं वे सोचते हैं कि अंग्रेजी न रही तो देश पिछड़ जाएगा।

अंग्रेजी देश की अधिकतर जनता के लिए कठिन है, इसलिए वे जनता पर इसके माध्यम से अपना रौब रख सकते हैं। दूसरा कारण है–क्षेत्रीय भाषाओं के मन में बैठा भय। उन्हें लगता है कि यदि हिन्दी अधिक बड़ी तो क्षेत्रीय भाषाएँ पीछे रह जाएँगी।

वास्तव में ये दोनों विचार गलत हैं। ऊँचे पदों पर बैठे अधिकारी हिन्दी के माध्यम से देश की अधिक सेवा कर सकते हैं और जनता का प्रेम पा सकते हैं। आज अंग्रेजी क्षेत्रीय भाषाओं को पीछे धकेल रही है जबकि हिन्दी की प्रकृति किसी को पीछे करने की नहीं, बल्कि मेलजोल की है। यदि हिन्दी का विकास होता है, तो क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास होगा।

उपसंहार :

भारत की भूमि पर जन्म लेने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम भारत की भाषाओं के विकास पर बल दें और हिन्दी का विकास करके सभी भाषाओं को जोड़ने का प्रयास करें। तभी हिन्दी सचमुच राष्ट्रभाषा बन पाएगी।

(iv) दूरदर्शन का प्रभाव

दूरदर्शन का जीवन पर भूमिका

दूरदर्शन या टी.वी. आज हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। महलों से लेकर झोपड़ियों तक इसने अपनी जगह बना ली है। कुछ इसे 'बुद्धू बक्सा' कहते है तो कुछ 'जादू का पिटारा' जो भी हो, ज्ञान और मनोरंजन का आज यह सबसे प्रभावशाली साधन बन चुका है।

दूरदर्शन का विस्तार :

दूरदर्शन का अविष्कार उन्नीसवीं सदी में महान वैज्ञानिक जे.एल. बेयर्ड ने किया था। इसका पहला सार्वजनिक प्रदर्शन सन् 1925 में लंदन में हुआ था। तब से आज तक इसका प्रसार निरंतर बढ़ते जा रहा है। भारत में 15 सितम्बर, 1959 को हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने आकाशवाणी के टेलिविजन विभाग का उद्घाटन किया था।

आज हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। मनोरंजन का इससे सस्ता और प्रभावशाली कोई अन्य साधन नहीं है। नृत्य, संगीत, नाटक एवं फिल्म का आनन्द घर बैठे ही लिया जा सकता है। जब से विभिन्न चैनल आए है, मनोरंजन कार्यक्रम की बाढ़ सी आ गयी है। आप उदास है तो बस बटन दबाये और हँसी–ठहाकों की दुनिया में खो जाए। नई–नई धारावाहिक कुछ समय के लिए हमें कल्पना की दुनिया में ले जाते हैं। जहाँ पहुँचकर हम दिनभर की थकान भूल जाते हैं।

यह मनोरंजन का खजाना है ही, ज्ञान का भंडार भी है। घर बैठे आप देशविदेश की सैर करने के साथ–साथ वहाँ की सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। बर्फीले हिम प्रदेश, सूखे रेगिस्तान, घने भयावह जंगल, गहरे सागरों के भीतर की दुनिया–जहाँ जाना चाहें, आप रिमोट का बटन दबाकर पहुँच सकते हैं। डिस्कवरी, हिस्ट्री चैनल, ज्योग्राफिक चैनल इत्यादि कुछ चैनल है जिनके कार्यक्रम ज्ञानवर्धक होने के साथ–साथ मनोरंजन और मनोहारी भी होते हैं। चिकित्साय, कृषि, व्यापार, खेलकूद आदि से संबंधित कई चैनल इन क्षेत्रों की

आधुनिकतम जानकारी चौबीसों घंटे देते है। देश–विदेश के समाचार एवं समाज तथा देश से जुड़ी घटनाओं पर परिचर्चाएं भी प्रसारित की जाती हैं। जीवन एवं स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने वाले कार्यक्रम भी उपयोगी होते है। अब तो धर्म हो या योग सभी में दूरदर्शन हमें जोड़े रखता है।

हानियाँ :

फूलों के साथ काँटे भी होते है। इसी प्रकार दूरदर्शन के लाभ तो है लेकिन हानियाँ भी है। पारिवारिक रिश्तों में कुप्रभाव डालना शुरू कर दिया है। पहले सब साथ बैठकर हँसते–बोलते थे, अपना सुख–दुःख बाँटते थे। अब बस दूरदर्शन (टी.वी.) के सामने बैठ जाते है। इससे कार्यक्रम का अस्तर दिन–व–दिन ऊँचा होने के स्थान पर गिरता जा रहा है। फूहड़, अश्लील कार्यक्रमों का किशोरों और युवाओं पर बुरा असर पड़ रहा हैं। लगातार देखते रहने से आँखों पर जोर पड़ता है सैर करने के स्थान पर बैठे रहने से शरीर में कई रोग घर कर लेते हैं। मोटापा उनमें प्रमुख है।

उपसंहार :

अंतत : कहा जा सकता है की दूरदर्शन मनोरंजन और ज्ञान का ऐसा जंगल है, जहाँ हरियाली भी है और जहरीले पेड़ पौधे भी। चौकड़ी भरते हिरनों के झुण्ड भी है, और खौफनाक शेर–चीते भी। आवश्यकता है हम विवेक से काम ले और रिमोट के बटन का सही प्रयोग करें। केवल ऐसे कार्यक्रम ही देखें, जो उच्चस्तरीय हों, हमारे विकास में साधक हों बाधक नहीं। यह हमारे नीरस जीवन में रस घोलने और ज्ञान के सूर्य से जीवन को जगमगाने का प्रभावशाली साधन हैं।

❍❍❍

ENGINEERS ACADEMY